प्रातः क्लास 4/12/68 ओम शान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओम शान्ति। मीठे-2 तुम बच्चे हो लक्की सितारे। तुम जानते हो हम शान्तिधाम को भी याद करते हैं। बाप को भी याद करते हैं। बाप को याद करने से हम पवित्र बनकर घर जावेंगे। यहाँ बैठे यह ख्याल करते हो ना। बाप और कोई तकलीफ नहीं देते हैं। जीवन-मुक्ति को तो दुनिया में कोई जानते ही नहीं। वे सभी पुरु॰ करते हैं मुक्ति के लिए; परन्तु मुक्ति का अर्थ नहीं समझते। कोई कहते हैं हम ब्रह्म में लीन हो जावेंगे। फिर आवेंगे ही नहीं। उनको यह पता नहीं है हमको इस चक्र में ज़रूर आना ही है। अभी तुम बच्चे इन बातों को समझते हो। तुम बच्चों को मालूम है हम स्वदर्शनचक्रधारी लक्की सितारे हैं। लक्की कहा जाता है तकदीरवान को। अभी तुम बच्चों को तकदीरवान बाप ही बनाते हैं। जैसे बाप वैसे बच्चे होते हैं। कोई बाप साहुकार होते, कोई बाप गरीब भी होते हैं। तुम बच्चे जानते हो हमको तो बेहद का बाप मिला है। जो जितना लक्की बनना चाहे वह बन सकते हैं। जितना साहुकार जो बनना चाहे बन सकते हैं। बाप कहते हैं जो चाहिए सो पुरुषार्थ से लो। सारा पुरुषार्थ पर मदार है। पुरुषार्थ कर जितना ऊँच पद लेना चाहिए ले सकते हो। ऊँच ते ऊँच पद है यह (ल॰ना॰)। जितना तुम बाप को याद करेंगे और चार्ट भी अच्छा रखेंगे, चार्ट भी ज़रूर रखना है; क्योंकि तमोप्रधान से सतोप्रधान ज़रूर बनना ही है। बुद्धू बनकर ऐसे ही नहीं बैठना है। बाप ने समझाया है भक्तिमार्ग अर्थात पुरानी दुनिया अभी पूरी होती है। बाप आते ही हैं नई दुनिया, सतोप्रधान दुनिया में ले जाने। वह है बेहद का बाप बेहद का सुख देने वाला। समझाते हैं सतोप्रधान बनने से ही तुम बेहद का सुख पा सकेंगे। सतो बनेंगे तो कम सुख, रजो बनेंगे तो उससे कम सुख। हिसाब सारा बाप बतला देते हैं। अभी तुम तमोप्रधान हो तो तुमको ज़रा भी खुशी नहीं है। वहाँ तुम कितना खुश रहते हो। अथाह धन तुमको मिलता है। अथाह सुख मिलते हैं। बेहद के बाप से वर्सा पाने का और कोई उपाय है नहीं। जितना बाप को याद करेंगे, याद से ही ऑटोमैटिकली दैवीगुण भी ज़रूर आवेंगे। सतोप्रधान बनना है, तो दैवीगुण ज़रूर चाहिए। अपनी जाँच आपे ही करो। जितना ऊँच मर्तबे लेने चाहो ले सकते हो अपने पुरुषार्थ से। पढ़ाने वाला टीचर तो बैठा हुआ है। अक्षर ही दो हैं मन्मनाभव, मद्याजीभव। बेहद के बाप को पहचान जाते हो, वह बेहद का बाप ही बेहद की नॉलेज देने वाला है। पतित से पावन बनने का रास्ता भी वह बेहद का बाप ही समझाते हैं। तो बाप जो समझाते हैं वह कोई नई बात नहीं। गीता में भी लगा(लिखा) हुआ है, आटे में लून मिसल है। अपन को आत्मा समझो। देह के सभी धर्म भूल जाओ। तुम शुरू में नंगे थे। अभी अनेक मित्र-संबंधियों के बन्धन में आए हो। सभी हैं तमोप्रधान। अभी फिर सतोप्रधान बनना है। तुम जानते हो हम तमोप्रधान से सतोप्रधान बनते हैं, फिर मित्र-संबंधी आ(दि) सभी पवित्र होंगे। जितना जो कल्प पहले सतोप्रधान बना है उतना ही फिर बनेंगे। उनका पुरुषार्थ ही ऐसा होगा। अभी फॉलो किसको करना चाहिए? गायन है ना फॉलो फादर। जैसे यह बाप को याद करते हैं, पुरुषार्थ करते हैं, उनको फॉलो करो। पुरुषार्थ कराने वाला तो बाप है। वह तो पुरुषार्थ करते नहीं हैं। वह पुरुषार्थ कराते हैं, फिर कहते हैं मीठे-2 बच्चों फॉलो फादर। गुप्त मदर-फादर है ना। मदर गुप्त है, फादर तो देखने में आते हैं। यह अच्छी रीत समझने का है। ऐसा ऊँच पद पाना है तो बाप को अच्छी रीत याद करो। जैसे यह फादर याद करते हैं। यह फादर ही सबसे ऊँच पद पाते हैं। यह बहुत ऊँच था। फिर इनके ही बहुत जन्म के अन्त में मैं प्रवेश करता हूँ। यह अच्छी रीत याद करो। भूलो नहीं। माया भुलाती बहुतों को है। तुम कहते हो हम नर से ना॰ बनें। वह भी बाप युक्ति बताते हैं, कैसे तुम बन सकते हो। यह भी जानते हैं सभी तो एक्युरेट फॉलो नहीं करेंगे। एम-ऑबजेक्ट बाप बतलाते हैं फॉलो फादर। अभी का ही गायन है। बाप भी अभी तुम बच्चों को ज्ञान देते हैं। सन्यासियों के फालोअर्स कहलाते हैं; परन्तु वह तो रांग है ना। फालो करते ही नहीं। वह सभी हैं ब्रह्म ज्ञानी, तत्व ज्ञानी। उनको ईश्वर ज्ञान नहीं देते। तत्व अथवा ब्रह्मज्ञान कहलाते हैं; परन्तु तत्व अथवा ब्रह्म उन्हों को ज्ञान नहीं देते। वह सभी है शास्त्रों का ज्ञान। यहाँ तुमको बाप ज्ञान देते हैं, जिसको ज्ञान सागर कहा जाता

है। यह अच्छी रीत नोट करो। तुम भूल जाते हो। यह दिल अन्दर अच्छी रीत विचार करने की बातें हैं। बाप रोज़-2 कहते हैं मीठे-2 बच्चे अपन को आत्मा समझो, मुझ बाप को याद करो। अभी वापस जाना है। पतित तो जा न सकेंगे। योगबल से पवित्र होना है या फिर सज़ा खाकर जावेंगे। सभी का हिसाब-किताब चुक्तू होना है ज़रूर। फिर जमा भी करना है। दुख का खाता चुक्तू करना है और फिर जो बनाए हैं उनको जमा करना है सतोप्रधान में। बाप ने समझाया है तुम आत्माएँ असल में परमधाम के रहने वाले हो। फिर यहाँ सुख और दुख का पार्ट बजाया है। सुख का पार्ट है रामराज्य में। दुख का पार्ट है रावण राज्य में। रामराज्य स्वर्ग को कहा जाता है। वहाँ कम्पलीट सुख है। गाते भी हैं स्वर्गवासी और नर्कवासी। तो यह अच्छी रीत धारण करना है। जितना-2 तमोप्रधान से सतोप्रधान बनते जावेंगे उतना अन्दर में तुमको खुशी भी होगी। तुम रजो में द्वापर में थे तो भी खुश थे, तुम इतने दुखी, विकारी नहीं थे। यहाँ तो अभी कितने विकारी, दुखी हैं। तुम अपने बड़ों को देखो कितने विकारी, शराबी होते हैं। अक्सर करके पुरुष ही बहुत शराबी और कामी होते हैं। शराब पीना और छी-छी होना। इसमें ही पैसे उड़ा देते हैं। यह बाबा जो गोरा था फिर सांवरा बना है। यह अनुभवी बहुत है। शराब बहुत खराब चीज़ है। सतयुग में तो यह हैं ही शुद्ध आत्माएँ। फिर नीचे उतरते-2 बिल्कुल ही छी-छी हो जाते हैं। इसलिए उनको रौरव नर्क कहा जाता है। शराब ऐसी चीज़ है जो झगड़ा, मारा-मारी, नुकसान करने देरी नहीं करते। उस समय मनुष्य की बुद्धि जैसे भ्रष्ट रहती है। माया बड़ी दुस्तर है। बाप सर्वशक्तिवान है सुख देने वाला। वैसे फिर माया बहुत दुख देने वाली है। कलियुग में मनुष्य ही(की) हालत क्या हो जाती है। एकदम जड़-जड़ीभूत। कुछ भी समझते नहीं। जैसे कि बिल्कुल ही पत्थर बुद्धि। यह भी ड्रामा है ना। किसके तकदीर में न है तो फिर ऐसी बुद्धि बन जाती है। बाप ज्ञान तो बड़ा सहज देते हैं। बच्चे-बच्चे कह समझाते रहते हैं। माताएँ भी कहती हैं हमको 5 हैं लौकिक बच्चे और एक है पारलौकिक बच्चा, जो हमको सुखधाम ले चलने आए हैं। बाप भी समझते हैं, तो बच्चा भी समझते हैं। जादूगरनी(जादूगरी) ठहरी ना। बाप तो जादूगर तो बच्चे भी जादूगर बन जाते हैं। कहते हैं बाबा हमारा बच्चा भी है। हिर जाते हैं। तो बाप को फॉलो कर ऐसा बनना चाहिए। स्वर्ग में तो इनका राज्य था ना। शास्त्रों में यह बातें हैं नहीं। यह भक्तिमार्ग के शास्त्रों की भी ड्रामा में नूँध है। फिर भी होगी। यह भी बाप बैठ समझाते हैं। पढ़ाने वाला टीचर तो चाहिए ना। किताब थोड़े ही टीचर बन सकती। किताब ही टीचर बन जाए तो फिर टीचर की दरकार ही न रहे। यह किताब आदि सतयुग में होते ही नहीं। गीता में भी कृष्ण भगवानुवाच है। तो कृष्ण टीचर हुआ ना। टीचर ही पढ़ावेगा, सिर्फ भूल यह कर दी है जो नाम बदली कर दिया है। कितनी बड़ी भूल है। बुद्धि कितनी मलीन है। कहते हैं– गीता का भगवान कृष्ण है या शिवबाबा है, कोई भी हो, हमको मतलब शास्त्र पढ़ना है। कृष्ण भी वही है, भगवान भी वही है, ठिक्कर-भित्तर सभी वही है। बाप बैठ समझाते हैं तुम अपने आत्मा को तो समझते हो ना। आत्माओं का बाप भी ज़रूर है। जब कोई आते हैं तो सभी कहते हैं हिन्दू-मुस्लिम भाई-2, अर्थ कुछ भी नहीं समझते। भाई-2 का अर्थ समझाना चाहिए। ज़रूर एक बाप भी होगा। इतनी पाई पैसे की समझ भी न रही है। इनमें भी कोई समझ न थी। यह कहते थे हम सबसे जास्ती बेसमझ थे। समझदार भी नम्बरवन, फिर बेसमझ भी नम्बरवन बनते हैं। भगवानुवाच, यह बहुत जन्मों का अन्त का जन्म है। अर्थ कितना साफ बताते हैं। कोई ग्लानि नहीं करते हैं। बाप तो रास्ता बताते हैं। नम्बरवन सो लास्ट, गोरा सो सांवरा बनते हैं। तुम भी समझते हो हम गोरे थे फिर ऐसे बनेंगे। बाप को याद करने से ही यह बनेंगे। अभी हम वेश्यालय में हैं। इनको कहा जाता है रावण राज्य। वेश्यालय। राम राज्य को कहा जाता है शिवालय। सीता का राम उसने तो त्रेता में राज्य किया। इसमें भी समझ की बात है। दो कला कम कही जाती है। सतयुग है ऊँच ते ऊँच। उनको भी याद करते हैं। त्रेता और द्वापर को इतना याद नहीं करते हैं। सतयुग है नई दुनिया और कलियुग है पुरानी दुनिया। 100% सुख और 100% दुख। वह त्रेता और द्वापर है सेमी। इसलिए मुख्य

सतयुग और कलियुग गाया जाता है। बाप सतयुग स्थापन कर रहे हैं। अभी तुम्हारा काम है पुरुषार्थ करना या सतयुग निवासी बनेंगे या त्रेता निवासी बनेंगे। द्वापर में तो फिर नीचे उतरते हो। हो फिर भी देवी-देवता धर्म के; परन्तु पतित होने कारण अपन को देवी-देवता कहला नहीं सकते। तो बाप मीठे-2 बच्चों को रोज़-2 समझाते हैं। मुख्य बात है ही मन्मनाभव की। तो तुम्ही नम्बरवन बनते हो। 84 का चक्र लगाकर लास्ट में आते हो। फिर नम्बरवन में जाते हो। तो अभी बेहद के बाप को याद करना है। वह है बेहद का बाप। पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही बेहद का बाप आकर 21 पीढ़ी स्वर्ग का सुख तुमको देते हैं। पीढ़ी जब पूरी होती है तब तुम आपे ही शरीर छोड़ देते हो। योगबल है ना। कायदा ही ऐसा रचा हुआ है। इसको कहा जाता है योगबल। वहाँ ज्ञान की बात नहीं रहती। ऑटोमैटिकली तुम बूढ़े होते हो। वहाँ कोई बीमार आदि नहीं होते। एवर हेल्दी रहते हो। वहाँ दुःख का नाम-निशान नहीं रहता। फिर थोड़ी-2 कला कम होती है। अभी बच्चों को पुरुषार्थ करना है, बेहद के बाप से बेहद का वर्सा पाने का। पास विद ऑनर होना चाहिए। सभी तो ऊँच {पद} नहीं पा सकते। जो सर्विस नहीं करते हैं वह क्या पद पावेंगे? म्युज़ियम में बच्चे कितनी सर्विस करते हैं। बिगर बुलावे लोग आ जाते हैं। उनको (ि)विहंग मार्ग की सर्विस कहा जाता है। पता नहीं उससे भी कोई और विहंग मार्ग की सर्विस निकले। दो/चार मुख्य चित्र तो ज़रूर साथ में हों बड़े-2। त्रिमूर्ति-गोला-झाड़-सी(ढ़ी), यह तो हर जगह बहुत बड़े-2 हों। जब बच्चे होशियार होंगे तब तो सर्विस होगी ना। होने की है। गाँव-2 में भी सर्विस करनी है। माताएँ भल पढ़ी-लिखी नहीं हैं; परन्तु यह तो बहुत ही सहज है। बाप का परिचय देना है। आगे फिमेल पढ़ती नहीं थीं। मुसलमान के (र)ाज्य में एक आँख खोलकर बाहर निकलती थीं। सुहेनी-2 होती, सारा मुँह ढक लेती थीं कि कोई की नज़र न पड़े। अभी पेट आदि नंगा कर लेती हैं। आँखें क्रिमिनल बन जाती हैं। सतयुग में क्रिमिनल आई होती ही नहीं। यहाँ तो देखो क्या हाल है। सिंध में एक दाहिर राजा था। (उनकी हिस्ट्री) स्त्रियों के पिछाड़ी राजाओं ने अपनी राजाई (गं)वाई है। कितना पैसा खर्च करते हैं। कामी पुरुष अक्सर शराबी भी होते हैं। बाबा बहुत अनुभवी है। बाबा कहते (हैं) मैं यह सभी नहीं जानता हूँ। मैं तो ऊपर में रहता हूँ। यह सभी बातें यह बाबा तुमको सुनाते हैं। यह अनुभवी (है)। मैं तो मन्मनाभव की बातें सुनाता हूँ और सृष्टिचक्र का राज़ समझाता हूँ, जो यह नहीं जानते। यह अपना अनुभव अलग समझाते हैं। मैं इन बातों में नहीं जाता। मेरा पार्ट है सिर्फ तुमको रास्ता बताना। मैं बाप, टीचर, गुरु हूँ। टीचर बन तुमको पढ़ाता हूँ। बाकी इसमें कृपा आदि की कोई बात नहीं। पढ़ाता हूँ, फिर साथ में ले जाने वाला हूँ। इस पढ़ाई से ही सद्गति होती है। मैं आया हूँ तुमको ले चलने। शिव की बारात गाई हुई है। शंकर की बारात नहीं होती। शिव की बारात है सभी आत्माएँ। यह सभी हैं भक्तियाँ। मैं हूँ भगवान। तुमने हमको बुलाया ही है पावन बनाकर साथ में ले जाने। तो हम तुम बच्चों को साथ ले ही जावेंगे हिसाब-किताब चुक्तू कराकर।

बाप घड़ी-2 कहते हैं मन्मनाभव। बाप को याद करो तो वर्सा भी ज़रूर याद पड़ेगा। विश्व की बादशाही मिलती है तो इसके लिए पुरुषार्थ भी ऐसा करना है। तुम बच्चों को तकलीफ कोई नहीं देता हूँ। जानता हूँ तुमने बहुत दुःख देखी है। अभी तुमको कोई तकलीफ नहीं देता हूँ। भक्तिमार्ग में आयु भी छोटी होती है। अकाल(ले) मृत्यु हो जाती है। कितना या हुसैन मचाते हैं। कितना दुःख उठाते हैं। दिमाग़ ही खराब हो जाता है। अब बाप कहते हैं सिर्फ मुझे याद करते रहो। स्वर्ग का मालिक बनना है तो दैवीगुण भी धारण करनी है। पुरुषार्थ हमेशा ऊँच बनने का किया जाता है, हम ल॰ना॰ बनें। बाप कहते हैं मैं सूर्यवंशी-चंद्रवंशी, दोनों धर्म स्थापन करता हूँ। वह नापास होते हैं। इसलिए क्षत्रिय कहा जाता है। युद्ध के मैदान में हैं ना। अच्छा, मीठे-2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप व दादा का यादप्यार, गुडमॉर्निंग और नमस्ते।